वर्तनीगत अशुद्धियाँ और समाहार

राजकुमार अहिरवार
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

हिन्दी भाषा में जैसा बोला जाता है कि ठीक वैसा ही लिखा जाता है; और जैसा लिखा होता है, वैसा ही पढ़ा जाता है। जहाँ पढ़ने एवं लिखने में भिन्नता होती है, वहीं पर वर्तनीगत दोष उत्पन्न होते हैं। वर्तनीगत अशुद्धियों के लिये वर्णमाला की अज्ञानता, उच्चारण दोष, विपर्यय, स्थानीय बोलियों का प्रभाव, संस्कृत भाषा की संयोगात्मक प्रवृत्ति, आवयविक दोष, मात्राओं की अज्ञानता आदि अनेक कारण जिम्मेदार होते हैं। संस्कृत भाषा हेतु प्रयुक्त वर्णमाला की अपेक्षा हिन्दी भाषा हेतु प्रयुक्त वर्णमाला में वर्णों की संख्या अधिक है, क्योंकि संस्कृत भाषा यथास्थितिवादी है; जबकि हिन्दी भाषा प्रगतिगामी है। संस्कृत ने इतर-भाषा-ध्वनियों को आत्मसात् नहीं किया है; जबकि हिन्दी ने प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, अँग्रेजी, आदि भाषाओं की ध्वनियों को अंगीकार कर वर्णिक ध्वनियों की संख्या में वृद्धि की है। हिन्दी भाषा हेतु देवनागिरी लिपि में वर्णमाला को निम्न लिखित क्रम में निर्धारित कर सकते हैं -

स्वर वर्ण - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अँ, ऑ
मात्राएँ - , ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ, ँ, ॅ
अनुस्वार - अं (ं)　　　　विसर्ग - अः (:)
व्यंजन वर्ण (क वर्ग) - क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (ं)
व्यंजन वर्ण (च वर्ग) - च्, छ्, ज्, झ्, ञ् (ं)
व्यंजन वर्ण (ट वर्ग) - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् (ं)
व्यंजन वर्ण (त वर्ग) - त्, थ्, द्, ध्, न्
व्यंजन वर्ण (प वर्ग) - प्, फ्, ब्, भ्, म्
अवर्गीय व्यंजन - य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्, क्ष्, त्र्, ज्ञ्, ड़, ढ़, क़. ख़, ग़, ज़, फ़

उक्त ध्वनियों में से 'ऋ' और 'ऑ' स्वर ध्वनियों का प्रयोग हिन्दी शब्दों में नहीं होता है। 'ऋ' का प्रयोग संस्कृत शब्दावली में ही प्रयुक्त होता है - जैसे कृषि, पृथ्वी, आकृति, प्रवृत्ति, वृत्त, कृष्ण, कृपा, नृप, सृष्टि, शृंगार, दृश्य, पितृ, मातृ, भ्रातृ, आदि। इसी प्रकार से (ॅ) ध्वनि का प्रयोग अँग्रेजी शब्दों में ही होता है। जैसे - डॉक्टर, कॅरियर, डॉल, टॉय, ऑफिस, ऑफर, कॉल, हॉट, कॉलेज, कॉमन, क्लॉक, डॉग, फ्रॉक, चॉक, फ्रॉड, सॉप, डॉट आदि। चूँकि हिन्दी भाषा समस्त भाषाओं को स्वीकार करने में समर्थ हैं इसलिए इसने संस्कृत शब्दावली को ज्यों का त्यों ग्रहण करने के लिए 'ऋ' स्वर ध्वनि को तथा अंग्रेजी शब्दावली को ज्यों-का-त्यों ग्रहण करने के लिए 'ऑ' ध्वनि को स्वीकार किया है। सामान्यतः यह संज्ञान में आता है कि प्रयोक्ता उक्त दोनों ध्वनियों (ऋ, ऑ) की मूल भावना से अपरिचित होने पर मात्रा प्रयोग में त्रुटि कर बैठता है। जैसे 'कृपा' को 'क्रपा', 'सृष्टि' को 'स्रष्टि', 'शृंगार' को 'श्रंगार' 'दृश्य' को 'द्रश्य', 'कॉलेज' को 'कालेज', 'कौलेज', 'कालिज',

'कोलेज', 'ऑफिस' को 'आफिस', 'औफिस', 'ओफिस', 'डॉक्टर' को 'डाक्टर', 'डौक्टर', 'डोक्टर' आदि रूपों में लिखकर एवं पढ़कर स्वर संबंधी अशुद्धियाँ कर बैठता है जो भाषा की दृष्टि से क्षम्य नहीं हैं।

संस्कृत भाषा, बुन्देली बोली, मालवी बोली और निमाड़ी बोली में 'ढ़' ध्वनि का अभाव है। लेखक या वाचक 'ढ़' ध्वनि को 'ड़' ध्वनि मानकर 'पढ़ना' को 'पड़ना' 'चढ़ना' को 'चड़ना' 'गढ़' को 'गड़' 'चढ़ार' को 'चड़ार' 'कढ़ाई' को 'कड़ाई' लिखने और पढ़ने लगता है, जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। 'ढ़' ध्वनि का उच्चारण रोमन की ध्वनि RH जैसा होता है - जैसे गढ़ = GARH, राजगढ़ = RAJGARH लिखा और पढ़ा जाता है। कुछ प्रयोक्ता 'ढ़' को 'ढ' मानकर प्रयोग करते हैं। जैसे 'बढ़िया' को 'बढिया' 'बूढ़ा' को 'बूढा' आदि लिखकर और बोलकर त्रुटि करते हैं और साथ ही भावी पीढ़ी को भी दिग्भ्रमित करते हैं। इसी तरह 'ड़' ध्वनि के प्रयोग में 'ड़' के स्थान पर 'ड' का प्रयोग बहुत लोग करते हैं - जैसे 'गाड़ी' को 'गाडी' 'बड़बड़ाना' को 'बडबडाना', 'खिचड़ी' को 'खिचड़ी' आदि लिखकर वर्तनीगत अशुद्धियाँ करते हैं। हिन्दी को दीन-हीन मानकर मनमाना व्यवहार किया जा रहा है, जो प्रयोक्ता के व्यक्तित्व के कमजोर पक्ष को उद्घाटित करता हैं। वर्णमाला की अज्ञानता प्रयोक्ता के समस्त लेखन-पाठन को दुष्प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ती है।

'ह' ध्वनि के उच्चारण और लेखन-प्रयोग में भी असावधानी की जाती है। कुछ प्रयोक्ता 'ह' को 'हे' अथवा 'हि' के रूप में उच्चारित करते और लिखते हैं। जैसे - 'साहब' को 'साहेब' या 'साहिब', 'महल' को 'महेल' या 'महिल' उच्चारित करते हैं और लिखते भी हैं। कोई भी व्यंजन बिना मात्रा जोड़े पूर्णतः उच्चारित नहीं किया जा सकता है। अतः मूल व्यंजन 'ह्' में 'अ' स्वर (मात्रा) जुड़ने पर ही उसका उच्चारण 'ह' होता है। ऐसी स्थिति में 'ह' वर्ण का उच्चारण 'हे' या 'हि' करना दोषपूर्ण है। उक्त दोष से बचना चाहिए।

कुछ प्रयोक्ता अज्ञानतावश और कुछ क्षेत्रीय बोलियों के प्रभाववश अनुपयुक्त मात्रा का प्रयोग करते रहते हैं, जिसके कारण वर्तनी के शुद्ध रूप प्राप्त नहीं हो पाते हैं; साथ ही अनर्थ की गुंजाइश अधिक बनी रहती है। जैसे 'फूल' को 'फुल', 'कूल' को 'कुल' आदि अनेक शब्दों में दीर्घ 'ऊ' (ू) को ह्रस्व 'उ' (ु) की मात्र में बदल दिया जाता है, जो ठीक नहीं हैं। इसी तरह 'इ' (ि) और 'ई' (ी) की मात्रा प्रयोग में असावधानी नजर आती है। 'हरिकिशन' को 'हरीकिशन', 'परिचित', को 'परीचित' 'हरिसिंह' को 'हरीसिंह' 'अंजलि' को 'अंजली', 'सुरभि' को 'सुरभी' 'रवि' को 'रवी' आदि लिखे एवं पढ़े जाने वाले शब्दों में वर्तनी दोष स्पष्ट है, 'परन्तु' 'हिन्दी है', कहकर अपनी अज्ञानता के पल्ला झाड़ लिया जाता है। कई भौगोलिक और भाषाई क्षेत्रों में तो 'ऐ' और 'औ' की मात्राएँ ही प्रयोग में नहीं लायी जाती हैं। 'बेल' और 'बैल' में कोई अंतर ही नहीं मानते हैं; जबकि दोनों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। फिर भी लेखक और पाठक दोनों (बेल, बैल) को 'बेल' लिखना और बोलना पसंद करते हैं। ऐसे में वे या तो प्रसंगानुसार अर्थ ग्रहण करते हैं या फिर 'ए' और 'ऐ' की मात्राओं का ज्ञान ही नहीं रखते हैं। यही हाल 'ओ' और 'औ' मात्रा वाले शब्दों का है। 'ओर' और 'और' में भी कोई अंतर न समझकर एक मान लिया जाता है और अपेक्षित अर्थ समृद्ध पाठक या श्रोता को प्राप्त नहीं हो पाता है; जबकि मात्रा-भेद के कारणस्वरूप 'ओर' का अर्थ 'तरफ' दिशा बोध, Side आदि है तथा 'और' का अर्थ 'अन्य' या and (दूसरा) आदि है। इसी तरह 'बढ़ा; (अग्रिम, वृद्धि) को 'बड़ा' (दीर्घ, large) लिखेंगे और पढ़ेंगे तब हिन्दी में वर्तनीगत अशुद्धियाँ बनी ही रहेंगी; तथापि भाषा के उत्तम स्वरूप को नहीं पाया जा सकेगा। इतर हिन्दीभाषी जानकार हमारी और हमारी हिन्दी भाषा की खिल्ली ही उड़ायेगा, क्योंकि वह हिन्दी भाषा के मानक स्वरूप को सीख चुका होता है।

हिन्दीभाषी क्षेत्र के तमाम प्रयोक्ता अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता (ँ) में कोई फ़र्क करना ही नहीं जानते हैं। दोनों को एक मानकर अनुस्वार (ं) का ही प्रयोग करते देखे जाते हैं - जैसे 'माँ' को 'मां', 'आँख' को 'आंख' 'पाँच' को 'पांच' 'मुँह' को 'मुंह' 'कहाँ' को 'कहां' आदि रूपों में लिख-पढ़कर अज्ञानी लेखक एवं पाठक गद्गद् होता रहता है। यदि यही प्रवृत्ति बनी रही तब 'हंस' और 'हँस' शब्द समानार्थी हो जायेंगे, जिसका फल शुद्ध लेखन प्रतियोगिता या विभिन्न प्रतिस्पर्द्धाओं में भोगना पड़ेगा और भाषा - विशेषज्ञ के समक्ष ग्लानि-भाव धारण करना पड़ेगा। हिन्दी भाषा में 'त' वर्ग एवं 'प' वर्ग के वर्णों के साथ नासिक्य प्रयोग में क्रमशः 'न् (न) और 'म् (म) का प्रयोग किया जाना चाहिए, शेष वर्गीय और गैरवर्गीय व्यंजनों के साथ अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाना उचित है; लेकिन संस्कृत शब्दों के तत्सम रूपों के लेखन हेतु पंचम-वर्ण-नियम का पालन होना चाहिए। जैसे - 'पङ्कज' (पंकज) 'सञ्जय' (संजय), 'घण्टा' (घंटा) आदि रूप लिखे जाने चाहिए। चूँकि हिन्दी में 'ङ्', ञ् और 'ण्' ध्वनियाँ नहीं है अस्तु तीनों के उच्चारण में अनुस्वार (ं) ध्वनित होता है। अतः अनुस्वार (ं) प्रयोग उचित है। जैसे नंगा, पंगा, चंगा, पंछी, गंजिया, टंटा, फंडा, मंजिल, कंडा, बैकुंठ, ठंडा, आदि शब्द हिन्दी के शुद्ध रूप हैं। परंतु इसी क्रम में 'अम्माँ' को 'अंमाँ' 'चन्ना' को 'चंना', 'चन्दा' को 'चंदा' 'पम्प' को 'पंप' नहीं लिखा जा सकता है, क्योंकि ये हिन्दी के अशुद्ध रूप हैं; इसलिए कि यहाँ पर पंचम-वर्ण-नियम प्रयोग का पालन नहीं किया गया है जो आवश्यक होता है, और पालन करने से कोई व्यवधान भी नहीं है।

सन्धियों का उचित ज्ञान न होने के कारण भी वर्तनीगत अशुद्धियाँ होती हैं। जैसे कि 'विदेश' शब्द का पर्यायवाची 'अन्तर्राष्ट्रीय' अशुद्ध एवं अनर्थकारी है, क्योंकि संधि विच्छेद करने पर अंतः + राष्ट्रीय = अंतर्राष्ट्रीय होता है, जिसका अर्थ होता है 'राष्ट्र की सीमाओं के अंदर' अर्थात् राष्ट्रीय अथवा अंतर्देशीय। विदेशवाची अर्थ के लिए 'अन्तरराष्ट्रीय' शब्द ही उचित है जिसका अर्थ है - अंतर + राष्ट्रीय = 'अन्तरराष्ट्रीय' अर्थात् राष्ट्र की सीमाओं से बाहर, परदेश, विदेश, पर-राष्ट्र आदि। 'अन्तरराष्ट्रीय' संकर शब्द है जो हिन्दी (अंतर) और संस्कृत (राष्ट्र) भाषाओं के मेल से बना है। विद्या, विद्यालय, उद्योग, उद्यम आदि शब्दों के उच्चारण और लेखन में भी बहुत अधिक त्रुटियाँ की जाती हैं। इसका मूल कारण है - वर्ण-संयोग। संयुक्त वर्ण 'द्य' द् + य् + अ के संयोग से बना है जिसका वियोगीकृत रूप 'द्‌य' है, जिसे संकुचन विधि से 'द्य' लिखा जाता है। इस 'द्य' को पाठक 'द्‌य' न समझकर 'ध', 'ध्य', या 'घ' के रूप में ग्रहण कर लेता है। परिणामतः शब्द का उच्चारण एवं लेखक अशुद्ध हो जाता है। जैसे अनेक विद्यार्थियों, आम नागरिकों एवं उच्च शिक्षित नौकरी पेशा लोगों द्वारा 'विद्यालय' (विद्‌यालय) शब्द का उच्चारण 'विद्ध्यालय', 'विधालय', विध्यालय, विधालय आदि रूपों में किया जाता है जो पूर्णतः अनुचित है। यदि 'विद्यालय' शब्द को वियोगात्मक ढंग से 'विद्‌यालय' के रूप में लिखा जाये, तब त्रुटिपूर्ण उच्चारण एवं लेखन की समस्या स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

टंकण (टाइप राइटिंग) और हस्तलेखन में प्रायः यह देखने को मिलता है कि प्रयोक्ता (लेखक) 'द्व' (द्‌व) के लेखन प्रयोग में त्रुटि करता है। वह 'द्वारा' को 'व्दारा' के रूप में लिखता है लेकिन पढ़ता 'द्वारा' ही है। उसका कारण यह है कि उसे शब्द के वियोगात्मक रूप 'द्‌वारा' का ज्ञान नहीं है। इसी तरह, 'सिद्धांत' को 'सिध्दांत' के रूप में लिखा पाया जाता है, यदि इसे 'सिद्‌धान्त' के रूप में प्रयोग किया जाये, तब इस तरह की त्रुटियों से बचा जा सकता है। अनेक भाषाई क्षेत्रों में 'ब' और 'व' में कोई अन्तर नहीं किया जाता है और परिणाम अनर्थकारी होता है - जैसे 'वह' को 'बह' लिखा और पढ़ा जाता है। जबकि 'वह' का अर्थ सर्वनामिक प्रयोग है और 'बह' का अर्थ 'बहना' है। 'शिव' का उच्चारण और लेखन 'शिब' के रूप में हो रहा है।

शिबनारायण, शिबप्रताप, शिबलाल, शिबा, सम्भावना जैसे अनेकानेक शब्दों का त्रुटिपूर्ण उच्चारण और लेखन प्रायः देखने-सुनने को मिलता रहता है। भाषा को न समझने का परिणाम अनिष्टकारी ही होता है। कई क्षेत्रों की भाषाओं में महाप्राणत्व का अभाव है, जिससे उच्चारण और लेखन त्रुटिपूर्ण होने लगता है, जैसे - 'दूध' को 'दूद', 'छठवीं' को 'छटवीं', 'धंधा' को 'धन्दा', 'भूख' को 'भूक', 'बघार' को 'बगार', 'झुंझुनी' को 'झुंजुनी', 'भट्‌ठा' को 'भट्‌टा', 'गड्‌ढा' को 'गड्‌डा' आदि जैसे उच्चारण धड़ल्ले के साथ किये जा रहे हैं; और कहीं-कहीं उच्चारणस्वरूप लेखन भी पाया जाता है, जिसे क्षेत्रीयता की दुहाई देकर ठीक नहीं ठहराया जा सकता है।

कुछ शब्दों के उच्चारण में अनावश्यक द्वित्व प्रयोग किया जा रहा है - जैसे 'अन्याय' का उच्चारण 'अन्याय' किया जा रहा है। अ + न्याय = अन्याय। 'अ' उपसर्ग जुड़ने से 'न' का दुहराव दूर-दूर तक नहीं है। लेकिन यदि 'अन्' उपसर्ग जोड़ते हैं, तब अवश्य अन् + न्याय = अन्याय होगा। रूप दोनों शुद्ध हैं, परन्तु लेखन और उच्चारण में भिन्नता है। 'विद्वान' शब्द का उच्चारण भी द्वित्व के साथ विद्‌द्‌वान किया जाता है, लेकिन लिखा विद्वान (विद्‌वान) ही जाता है। 'विद्‌या' (विद्या) शब्द को भी 'विद्‌द्‌या' के रूप में सुना जाता है। 'सभ्य' को 'सब्भ्य' 'अन्य' को 'अन्न्य' खूब सुना जाता है। वर्ण दुहराव (द्वित्व) वहीं होता है जब दो समान ध्वनियाँ एक ही उच्चारण स्थान से क्रमशः उच्चरित हों, जैसे - दद्‌दा, पट्‌टा, मुन्ना, अन्न, किस्सा, उत्तम, गल्ला, पिज्जा, उज्ज्वल, पत्ता, डब्बा, कुप्पा, पप्पू, सुग्गा, जग्गी, कक्का मम्मी आदि।

हिन्दी के कुछ शब्दों के उच्चारण में तो अनुनासिकता विद्यमान रहती है लेकिन लेखन में नदारद रहती है। जैसे - सुनवाँ, मुनवाँ, कनवाँ, धनुवाँ, अमुवाँ, रमुवाँ, कनियाँ, धनियाँ, अमियाँ, छमियाँ, गुनियाँ, रमियाँ, भुमियाँ, चुनियाँ, पुनियाँ, सानियाँ, सोनियाँ, सुनियाँ मकरोनियाँ आदि तमाम शब्दों के उच्चारण में आनुनासिकता (ँ) विद्यमान है, किन्तु लेखन में नहीं है। उक्त अनुनासिकता उन्हीं शब्दों में होती है जहाँ 'न' और नासिक्य ध्वनि के बाद 'या' अथवा 'वा' वर्ण से शब्द का अंत होता है। अतः अनुनासिकता 'या' अथवा 'वा' वर्ण पर दर्शित होती है। 'म' वर्णध्वनि के पूर्व कोई नासिक्य ध्वनि (पंचमाक्षर ध्वनि) उच्चरित होती है। सवाल उठता है कि लेखन और उच्चारण में भिन्नता क्यों है ? जबकि हिन्दी भाषा की प्रवृत्ति ही है कि जो बोला जाएगा वही लिखा जाएगा। कुछ तो हमारी अनिर्णय की मानसिकता है, और कहीं-कहीं हम लकीर के फकीर हैं। डंके की चोट पर परिवर्तन से हम दूर भागते हैं। जैसा बोलते हैं, यदि वैसा ही हम 'सोनिया' को 'सोनियाँ' के रूप में लिखते हैं, तब भाषा और शब्दार्थ में कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा। यह बात अलग है कि हम ऐसे शब्दों का शुद्ध रूप रोमन वर्तनी में नहीं लिख सकते हैं, परिणामतः हमें झुँझलाहट होती है, और हम हार मानकर अंग्रेजी रूप SONIYA (सोनिया) स्वीकार कर लेते हैं। यह प्रवृत्ति ठीक नहीं हैं। उक्त उदाहरणों में भले ही कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द हों; परन्तु जब हम उन्हें हिन्दी भाषान्तर्गत स्वीकार करते हैं; तब वे शब्द हिन्दी की रूप-रचनानुसार ही स्थान पायेंगे, अन्यथा उच्चारण और लेखन में भेद बना ही रहेगा। इसलिए अनायास आगत उच्चारणगत् अनुनासिकता (ँ) को लेखन में स्वीकार करना चाहिए। ऐसा करने से शब्द-विपर्यय अथवा अर्थक्षरण की भी सम्भावना नहीं दिखायी देती है। भाषा के व्याकरणिक नियमों में कुछ अपवाद भी होते हैं। जैसे कि 'जन्म' शब्द को पंचमवर्ण नियमानुसार 'जम्म' नहीं लिख सकते हैं तथा अनुस्वार प्रयोग कर 'जन्म' को 'जंम' भी नहीं लिख सकते हैं। ठीक इसी तरह 'अन्य' को 'अंय' और 'अन्वय' का 'अंवय' नहीं लिखा जा सकता है। 'संन्यास' को 'संन्यास' के रूप में ही लिखा जायेगा।

आमतौर पर व्याकरण का सामान्य सा ज्ञान न होने पर हम शब्दों के अशुद्ध रूपों का प्रयोग करते रहते हैं। कुछ शब्दों के शुद्ध, अशुद्ध रूप निम्नलिखित हैं -

अशुद्ध	शुद्ध	व्याख्या
उपरोक्त	उपर्युक्त	उपरि + उक्त (यण स्वर संधि)
लघुत्तर	लघूत्तर	लघु + उत्तर (दीर्घ स्वर संधि)
अनाधिकृत	अनधिकृत	अन् + अधिकृत (अन् उपसर्ग)
छात्रायें	छात्राएँ	बहुवचन 'एँ' है न कि 'यें'
क्रपा	कृपा	'क' में 'ऋ' स्वर का संयोजन
जगत (विश्व)	जगत्	जगत = कुँए की मुँड़ेर, जगत् = संसार
नवीं	नौवीं	नौ + वीं (नौवीं) जैसे - सात + वीं (सातवीं)
बजरंगबली	वज्रांगबली	व्रज + अंग = वज्रांग (दीर्घ स्वर संधि)
रुद्राक्ष	रुद्राक्षि	रुद्र + अक्षि (रुद्राक्षि) = शिव-नेत्र
रामौतार	रामावतार	राम + अवतार (दीर्घ स्वर संधि)
उज्जवल	उज्ज्वल	उत् + ज्वल (उज्ज्वल) व्यंजन संधि
लारिया/लड़िया	लढ़िया	'लढ़ी' में 'इया' प्रत्यय है। लढ़ी = बैलगाड़ी लढ़िया का एक अर्थ राजमिस्त्री भी है। उच्चारण दोष के कारण महाप्राण 'ढ़' अल्पप्राण 'ड़' में बदल जाता है, अतः 'लढ़िया' को 'लड़िया' लिखा, पढ़ा जाने लगा। इसी 'लड़िया' शब्द का रोमन लिप्यन्तरण (LARIYA) है।
प्रावधान	प्रविधान	'विधि' से 'विधान' बना है, जिसमें 'प्र' उपसर्ग जुड़ने से 'प्रविधान' होता है, 'प्रावधान' नहीं।
करा	किया	क्रिया रूप है। करा, करी, करे, स्थानीय रूप हैं। मानक नहीं है।
चाय बुलाना	चाय मँगाना	निर्जीव वस्तुएँ मँगायी जाती हैं, सजीव नहीं।
वोलना	कहना	'बोलना' मात्र ध्वनि है। 'कहना' शब्दार्थ है।
स्त्रोत (संसाधन) के अर्थ में	स्रोत (स्‌रोत), (स्त्रोत)	'र' को 'त्र' मानने से त्रुटि होती है। स्त्रोत = स्तुति पाठ

जिन क्रिया शब्दों का अन्त 'य' से होता है उनके रूप 'य' में लगी मात्राओं से ही बनते हैं। खाया-खायी-खाये, गाया-गायी-गाये, आया-आयी-आये, पिया-पी-पिये, नहाया-नहायी-नहाये, मिटाया-मिटायी-मिटाये, लिया-ली-लिये, पढ़ाया-पढ़ायी-पढ़ाये आदि वे समस्त क्रियाएँ जिनका अन्त 'य' से होता है उनमें विकल्प के रूप में 'ये' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग कदापि नहीं किया जा सकता है। ऐसे शब्द जो क्रिया का काम नहीं करते हैं, प्रेरणार्थक, आदेशात्मक या अव्यय हैं, उनमें भूलकर भी शब्दान्त में 'ये' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उक्त शब्दों का अंत 'ए' से ही होता है जैसे - चाहिए, इसलिए, लीजिए, दीजिए, समझाइए

आदि। लिखाओ, पढ़ाओ, दिखाओ, सुनाओ, खिलाओ, पिलाओ, जैसे रूप भी क्रिया शब्द नहीं हैं। गुणवाचक या भाववाचक संज्ञाएँ भी क्रिया के रूप में प्रयुक्त नहीं होती हैं - जैसे मिठाई, खटाई, चटाई (वस्तु) मलाई, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, भरपाई, अमराई, ढिठाई आदि।

संस्कृत भाषा में दो स्वर एक साथ स्थान नहीं पाते हैं। इस नियम का पालन हिन्दी भाषा के प्रयोक्ता भी करते हैं जिससे कुछ शब्दों में असहजता सी प्रतीत होने लगती हैं अथवा उच्चारणानुरूप शब्द को लिख नहीं पाते हैं। जैसे 'गइया' हिन्दीं का शब्द है। इसमें 'अ' और 'इ' स्वर एक साथ आये हैं, जिसे व्याकरणशास्त्री सुधार कर 'गैया' लिखते हैं; क्योंकि अ + इ = ऐ होता है लेकिन 'गैया' का उच्चारण गइया ही होता है। अर्थात् उच्चारण और लेखन में अन्तर पड़ जाता है, इसलिए इस अन्तर को मिटाने के लिए हिन्दी भाषा की प्रकृति का अनुकरण करना चाहिए। हम किसी अन्य भाषा के गुलाम नहीं है, वस्तुतः दो स्वर संयोजन का नियम अमान्य होना चाहिए। हिन्दी शब्द इस तरह से लिखे जाने चाहिए - गइया, भइया, मड़इया, मइया, लड़इया, दइया, भुलइया, लिखवइया, पढ़इया, घुमइया, गवइया आदि।

जावेगा, खावेगा, पावेगा जैसे शब्द भी शुद्ध नहीं है। धातु में 'ना' प्रत्यय लगने पर वह क्रियाशब्द हो जाती है और जब उस क्रियाशब्द को काल की दशानुसार प्रयोग करते हैं तब उसमें विकार उत्पन्न होता है, पर वह विकार एक ही तरह का होता है, जैसे - खाना, खाया, खायेगा, पढ़ा, पढ़ाया, पढ़ायेगा आदि। भविष्य कालिक क्रिया रूपों को खावेगा, पढ़ावेगा आदि रूपों में नहीं लिखा जाना चाहिए। जब कभी आदेशात्मक क्रियाएँ प्रयोग होती हैं; तब हम लिखवायेगा, पढ़वायेगा, भिजवायेगा, जैसे रूप प्रयोग करते हैं। जिन क्रियाओं में 'वाना' प्रत्यय लगता होता है, उन्हीं के रूपों में 'एँ' लगता है। जैसे लिखवाना, लिखवाएँ। भिजवाएँ आदि। कुछ इस प्रकार हैं -

लिखना (लिखाएँ), - लिखवाना (लिखवाएँ), गाना - गववाना (गववाएँ)
पढ़ना (पढ़ाएँ), - पढ़वाना (पढ़वाएँ) सूँघना - सुँघवाना (सुँघवाएँ)
चलना (चलाएँ), - चलवाना (चलवाएँ), पूछना - पुछवाना (पुछवाएँ)

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि यदि भाषा और उसके व्यवहार को आत्मसात् कर लिया जाए, उसकी शब्द और अर्थगत वर्तनी का सूक्ष्म अध्ययन कर लिया जाए तथा उसके मानक रूप को स्वीकार कर प्रयोग में लाना आरम्भ कर दिया जाए, तब हिन्दी भाषा उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक एक रूपता को प्राप्त होगी; तब हम वास्तव में कह सकेंगे कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और उसका स्वरूप प्रतिमानित है।